IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY *(IJARETY)*

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi cross ref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

राजस्थान में खेलों में महिलाओं की दयनीय स्थिति

SMT. NEETA DANGI

D.P.E., SHALA KRIDA SANGAM KENDRA, KOTA, RAJASTHAN, INDIA

सार

हाल ही में कुछ खिलाड़ियों ने भारतीय कुश्ती संघ (WFI) के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए थे।

- इस मामले में खेल मंत्रालय ने 72 घंटे के भीतर WFI से स्पष्टीकरण मांगा है, यदि WFI जवाब देने में विफल रहता है, तो मंत्रालय राष्ट्रीय खेल विकास संहिता, 2011 के प्रावधानों के अनुसार संघ के खिलाफ कार्रवाई शुरू करेगा।

ऐसे आरोपों का परिदृश्य:

- सूचना का अधिकार (RTI) आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2010 से 2020 के बीच भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) को यौन उत्पीड़न की 45 शिकायतें मिलीं जिनमें से 29 शिकायतें कोचों के खिलाफ थीं।
- इनमें से कई रिपोर्ट किये गए मामलों में अभियुक्तों को सामान्य दंड के साथ उदारतापूर्वक छोड़ दिया गया था, जिसमें वेतन या पेंशन में मामूली कटौती तथा स्थानांतरण शामिल था।
- कुछ मामलों में अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है तथा कई वर्षों से चल रहे हैं और इनका कोई समाधान नहीं दिख रहा है।
    - खेल में दुर्व्यवहार का मामला वर्ष 2021 में जर्मनी में एक चुनावी मुद्दा था। संघीय संसद की खेल समिति ने मई 2021 में खेलों में भावनात्मक, शारीरिक और यौन हिंसा पर एक सार्वजनिक सुनवाई की मेज़बानी की।
- अब समय आ गया है कि भारत इस मुद्दे पर चर्चा करे तथा जंतर- मंतर पर खिलाड़ियों के विरोध प्रदर्शन का इंतज़ार न करे।
- 21वीं सदी में रहते हुए जहाँ हमने अपनी बोली लगाने के लिये रोबोट नियंत्रण तकनीक विकसित की है, अभी भी एक पहलू है जहाँ हम प्रगति की बात करते समय खुद को पिछड़ा हुआ पाते हैं- लिंग समानता।

परिचय

राजस्थान में महिला खिलाड़ियों के समक्ष मुद्दे:

- वित्तपोषण और बजट:
    - पुरुष खिलाड़ियों की तुलना में महिला खिलाड़ियों को कम धन मिल पाता है, जिससे उनके लिये प्रतिस्पर्द्धा करना एवं लगातार कार्यक्रम चलाना मुश्किल हो जाता है।
- उत्प्लावक लिंगवाद (Buoyant Sexism):

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

- महिलाओं को रोज़मर्रा के आधार पर लिंगवाद के कई मुद्दों का सामना करना पड़ता है, चाहे वह घर के बाहर कार्यस्थल हो या घर। उनके पहनावे, उनकी बातचीत व व्यवहार की निगरानी की जाती है और इन्हीं आधारों पर न्याय किया जाता है।[1,2,3]

- लैंगिक असमानता:
  - अपने सामाजिक अधिकारों की वकालत हेतु महिलाओं के प्रयासों के बावजूद उन्हें अभी भी पेशेवर मोर्चे पर विशेष रूप से खेल जगत में अपने पुरुष समकक्षों के समान सम्मान या मान्यता प्राप्त नहीं होती है।
- पहुँच की कमी और महँगा:
  - स्कूलों में शारीरिक शिक्षा की कमी तथा हाईस्कूल एवं कॉलेज दोनों में खेल के सीमित अवसरों का अर्थ है कि लड़कियों को खेल के लिये कहीं और देखना पड़ता है- जो उपलब्ध नहीं हैं या अधिक महँगे हैं।
  - अक्सर घर के निकट पर्याप्त खेल सुविधाओं की कमी के कारण लड़कियों के लिये खेलों में भाग लेना अत्यंत कठिन हो जाता है।
- सुरक्षा और परिवहन मुद्दे:
  - खेलों में सम्मिलित होने के लिये स्थान के साथ-साथ सुविधाओं की आवश्यकता होती है, जो कई लड़कियों, विशेष रूप से घने शहरी क्षेत्रों में रहने वाली लड़कियों को जोखिम उठाकर खतरनाक इलाकों को पार कर या मीलों दूर स्थित अच्छी सुविधा की प्राप्ति हेतु यात्रा कर खेलों में सम्मिलित होने में असमर्थ बनाता है।
  - कोई सुरक्षित विकल्प न होने के कारण अन्य परिवारों के साथ कारपूलिंग जैसी परिस्थिति या लड़की के पास परिवार के साथ घर पर रहने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं होता है।
    - उदाहरण के लिये मणिपुर खेल पावरहाउस के लिये जाना जाता है, किंतु 48% महिला एथलीट अभ्यास स्थल तक पहुँचने हेतु 10 किमी. से अधिक की यात्रा करती हैं।
- राजस्थान में सामाजिक दृष्टिकोण और विरूपण:
  - हाल की प्रगति के बावजूद महिला एथलीटों के साथ वास्तविक या कथित यौन अभिविन्यास और लिंग पहचान के आधार पर भेदभाव बना हुआ है।
  - खेल में लड़कियों को प्रारंभिक स्थिति में धमकी, सामाजिक अलगाव, नकारात्मक प्रदर्शन मूल्यांकन के कारण नुकसान का अनुभव हो सकता है।
  - किशोरावस्था के दौरान "समलैंगिक" टैग का डर सामाजिक रूप से कमज़ोर कई लड़कियों को खेल से बाहर करने हेतु पर्याप्त है। [4,5,6]
- गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण की कमी:
  - लड़कियों को लड़को जितनी बेहतर सुविधाएँ नहीं प्राप्त हैं और खेलने का कोई इष्टतम समय नहीं निर्धारित किया जा सकता है।
  - प्रशिक्षित एवं गुणवत्तायुक्त कोच की अनुपस्थिति, या कोच उन लड़कों के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जिनके पास प्रशिक्षण हेतु अधिक धन है।
  - लड़कों के समान लड़कियों को कई कार्यक्रमों के लिये धन नहीं मिलता है, जिससे विकास करने और खेल का आनंद लेने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है। संक्षेप में खेल अब "आनंददायक" नहीं हैं।

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

- सकारात्मक रोल मॉडल की कमी:
  - वर्तमान में लड़कियों द्वारा सशक्त महिला एथलीटों को रोल मॉडल मानने के स्थान पर उनकी बाह्य सुंदरता पर अधिक ध्यान दिया जाना।
  - सहकर्मी का दबाव उस स्थिति में किसी भी उम्र की लड़कियों के लिये मुश्किल हो सकता है; जब उस दबाव का मुकाबला खेल और स्वस्थ शारीरिक गतिविधि में भाग लेने के लिये सशक्त प्रोत्साहन के साथ नहीं किया जाता है, परिणामतः यह लड़कियों द्वारा खेल को पूरी तरह से छोड़ने का कारण बन सकता है।
- सीमित मीडिया कवरेज:
  - महिला खेलों को अक्सर मीडिया में कम दिखाया जाता है, जिससे महिला एथलीटों के लिये पहचान और प्रायोजन के अवसर प्राप्त करना कठिन हो सकता है।
- गर्भावस्था और मातृत्व:
  - महिला एथलीटों को अक्सर मातृत्व और खेल कॅरियर के बीच संतुलन स्थापित करनेमें चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
  - यह महिला एथलीटों के प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्द्धा के अवसरों को प्रभावित कर सकता है।

राजस्थान में खेलों में अधिक महिला भागीदारी का महत्त्व:

- शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य:
  - खेल पुरुष और महिला दोनों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
  - जो लड़कियाँ अपनी किशोरावस्था और शुरुआती वयस्कता के दौरान खेल में भाग लेती हैं, उनके जीवन में स्तन कैंसर होने की संभावना 20% कम हो जाती है।
- लैंगिक समानता:
  - खेलों में महिलाओं के लिये समान अवसर और संसाधन प्रदान कर हम उन बाधाओं और रूढ़ियों को तोड़ने में मदद कर सकते हैं जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में महिलाओं की क्षमता व भागीदारी को सीमित करते हैं।
    - खेल अपने बुनियादी रूप में संतुलित भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और इसमें लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की क्षमता है, SDG लक्ष्य संख्या 5 के अंतर्गत भी लैंगिक समानता प्राप्त करने और सभी को महिलाओं तथा लड़कियों को सशक्त बनाने की बात की गई है।
- आर्थिक सशक्तीकरण:
  - खेलों में भाग लेने वाली महिलाओं को अक्सर शिक्षा और रोज़गार के अधिक अवसर मिलते हैं जो आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में अहम कदम हो सकता है।
- सामाजिक संदर्भों में सुधार:
  - खेलों में महिलाओं की भागीदारी महिलाओं और उनकी क्षमताओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को बदलने में भी मदद कर सकती है।
  - खेलों में महिलाओं की उत्कृष्टता, अन्य महिलाओं के लिये प्रेरिणा का स्रोत हो सकती है और साथ ही महिलाओं के प्रति रूढ़िवादिता को चुनौती दी जा सकती है।
- प्रतिनिधित्त्व:

- खेलों में महिलाओं की भागीदारी, अन्य महिलाओं के लिये कोचिंग और प्रशासन सहित नेतृत्त्व संबंधी भूमिकाओं में बेहतर प्रतिनिधित्त्व प्रदान करने में मदद कर सकती है।
- यह खेल को कॅरियर के रूप में अपनाने के लिये युवा लड़कियों के लिये एक प्रेरणा के रूप में भी काम कर सकता है।

- समुदाय निर्माण:
  - खेल के माध्यम से लोगों को एकजुट किया जा सकता है और यह समाज के भीतर विभिन्न समूहों के बीच अधिक समझ एवं सम्मान को बढ़ावा दे सकता है।
  - महिलाओं के बीच खेलों की अधिक भागीदारी को बढ़ावा देकर, हम मज़बूत और अधिक समावेशी समुदायों के निर्माण में मदद कर सकते हैं।[7,8,9]

राजस्थान में यौन उत्पीड़न के लिये सुरक्षा उपाय:

- कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013
- यौन उत्पीड़न से महिलाओं का संरक्षण (POSH) अधिनियम, 2013
- शी-बॉक्स
- राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW)
- यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम, 2012 (POCSO अधिनियम)

आगे की राह

- भारत में सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण के कारण खेल में महिलाओं की भागीदारी परंपरागत रूप से कम रही है। हालाँकि हाल के वर्षों में खेलों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने और उन्हें प्रोत्साहित करने के प्रयास किये गए हैं, जैसे कि महिला एथलीटों के लिये वित्त एवं संसाधन में वृद्धि करने हेतु नीतियों का कार्यान्वयन, छोटी उम्र से ही लड़कियों को खेलों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने के लिये कार्यक्रमों का निर्माण।
- इन प्रयासों के बावजूद भारत में खेल भागीदारी और प्रतिनिधित्त्व में लैंगिक समानता हासिल करने के मामले में अभी एक लंबा रास्ता तय करना शेष है।
- भारत में खेल विकास की प्रक्रिया में हैं। विकास की इस दर को तेज़ करने के लिये समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता होगी। बुनियादी ढाँचे के विकास, खेल प्रतिभाओं की पहचान करने, नियमित खेल का आयोजन करने और ज़मीनी स्तर पर जागरूकता पैदा करने के प्रयासों की आवश्यकता है।

विचार-विमर्श

''मैं हमेशा ये सोच के रोता रहा कि छोरा होता तो देश के लिये गोल्ड लाता। ये बात मेरे समझ में न आई कि गोल्ड तो गोल्ड होता है, छोरा लावे या छोरी।'' साल 2016 में आई आमिर खान की फिल्म 'दंगल' का ये डायलॉग तो हम सभी ने सुना ही होगा। ये महज एक फिल्म का डायलॉग भर नहीं है जिसका आनंद लिया और छोड़कर आगे बढ़ गए, बल्कि ये बहुत गहरी बात है जिसे आज तक हमारा भारतीय समाज पूरी तरह से आत्मसात नहीं कर पाया है। जी हाँ, लिंग समानता को लेकर हम कितनी भी बड़ी-बड़ी बातें क्यों न कर लें, लेकिन वास्तविकता यह है कि आज भी भारत में लिंग असमानता बड़े पैमाने पर है जिसका एक जीता जागता उदाहरण खेल की दुनिया है। वैसे भी खेलों को लेकर भारत का रवैया हमेशा से सुस्ती भरा रहा है, उसमें भी महिलाओं को प्रोत्साहन मिलना तो बहुत दूर की बात है। ऐसे में पर्याप्त समर्थन के अभाव व सामाजिक वर्जनाओं को तोड़कर अपना परचम लहराने वाली मैरी कॉम, विनेश फोगाट, बबिता फोगाट, मानसी जोशी, दुति चंद, पी.वी सिंधु, हिमा दास जैसी महिला

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

खिलाड़ियों को भूला नहीं जा सकता है। आज हम इस लेख में, अपनी प्रतिभा से खेल की दुनिया और समाज में मिसाल बनीं इन महिला खिलाड़ियों के बारे में तो जानेंगे ही, साथ ही यह भी जानेंगे कि आखिर इस क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी तुलनात्मक रूप से कम होने की क्या वजह है; क्यों आज भी अधिकाँश घरों के लोग अपनी बेटियों को खेल के क्षेत्र में करियर बनाने का समर्थन नहीं करते।[10,11,12]

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में पुरुषों के वर्चस्व को चुनौती दे रहीं इन महिला खिलाड़ियों के संघर्ष की दास्तां सुनकर आप भी यह कहने को मज़बूर हो जाएंगे कि ''म्हारी छोरियां छोरों से कम हैं के''।

हिमा दास- ढिंग एक्सप्रेस के नाम से मशहूर हिमा दास का जन्म 9 जनवरी 2000 को असम के नगांव जिले के ढिंग गाँव में हुआ था। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उनके पिता के पास मात्र दो बीघा जमीन थी जिस पर खेती करके वह आजीविका चलाते थे। शुरू में हिमा अपने धान के खेतों में ही अभ्यास करती थीं। पैसों की कमी की वजह से उनके पास अच्छे जूते भी नहीं थे। हिमा फुटबॉल में स्ट्राइकर बनना चाहती थीं। एक दिन उनके दौड़ने की क्षमता देखकर किसी ने उन्हें एथलीट बनने की सलाह दी और यहीं से शुरू हुआ उनके एथलीट बनने का सफर। बता दें कि, हिमा ट्रैक स्पर्धा में विश्व स्तर पर गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी हैं। हिमा के ज़ज्बे और प्रदर्शन को देखते हुए असम पुलिस में उन्हें उप अधीक्षक (डीएसपी) बनाया गया है। हिमा दास ने कई प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीता है।

मैरी कॉम- बॉक्सर मैरीकॉम का जन्म 1 मार्च 1983 को भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर के एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनका बचपन भी बहुत गरीबी में गुजरा। बॉक्सिंग शुरू करने के बाद मैरी को पता था कि उनका परिवार उनके बॉक्सिंग में करियर बनाने के विचार को कभी नहीं मानेगा, जिस वजह से उन्होंने इस बात को अपने परिवार से छिपाकर रखा था। साल 1998 से 2000 तक वे अपने घर में बिना बताये इसकी ट्रेनिंग लेती रहीं। सन 2000 में जब मैरी ने मणिपुर में 'वीमेन बॉक्सिंग चैम्पियनशिप' में जीत हासिल की, और उन्हें बॉक्सर का अवार्ड मिला तब परिवार को उनके बॉक्सर होने का पता चला। बड़ी बात यह है कि, भारत में जहाँ शादी और बच्चों के बाद महिला खिलाड़ी का करियर खत्म माना जाता है, ऐसे में मैरीकॉम ने माँ बनने के बाद भी खेलना नहीं छोड़ा। तीन बच्चों की माँ बनने के बाद भी मैरीकॉम ने वर्ल्ड चैंपियनशिप जीती। वह दुनिया की एकमात्र बॉक्सर हैं जिन्होंने कुल आठ वर्ल्ड चैंपियनशिप मेडल जीते हैं।

विनेश फोगाट- पहलवान विनेश फोगाट का जन्म 25 अगस्त 1994 को भारत के हरियाणा राज्य में हुआ था, जो कि भारत के सबसे कम लिंगानुपात वाले राज्यों में से एक है। जब विनेश ने अपने गाँव में कुश्ती का अभ्यास शुरू किया तो लड़कों का खेल समझे जाने वाले खेल पहलवानी चुनने और कपड़ों की च्वाइस के लिये विनेश को बहुत कुछ झेलना पड़ा, लेकिन विनेश ने हार नहीं मानी और इस यात्रा में पिता के बाद उनका साथ उनके ताऊ ने दिया। खेल की इस दुनिया में विनेश ने वर्ल्ड चैंपियनशिप में कांस्य पदक और कॉमनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक जीतकर तिरंगे की शान बढ़ाई है। यह भी जानना ज़रूरी है कि, विनेश वर्ल्ड चैंपियशिप में दो पदक जीतने वाले देश की पहली महिला पहलवान हैं।

दुति चंद- विनेश फोगाट जैसी खिलाड़ियों ने जहाँ पुरुष प्रधान मानसिकता को चुनौती दी, वहीं दुति चंद ने गरीबी और जेंडर के इर्द-गिर्द बनी रूढ़ियों को तोड़ा। दुति का जन्म 3 फरवरी 1996 को उड़ीसा राज्य के जाजपुर जिले में हुआ था। इनके पिता एक बुनकर थे। इनकी मां भी बुनकर का काम करती थीं। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी लेकिन दुति की मेहनत को देखते हुए उनके घर और गाँव वाले सभी को यकीन था कि एक दिन वह बहुत आगे तक जाएँगी। एक कहावत 'होनहार बिरवान के चिकने पात' दुति पर पूरी तरह से लागू होती है। इतना ही नहीं, दुति को खेल में भाग लेने के लिये भी कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी थी, लेकिन दुति ने यह लड़ाई भी जीती। आज दुति भारत की सबसे तेज भागने वाली एथलीट्स में से हैं।

पी.वी सिंधु- तेलंगाना में रहने वाली पीवी सिंधु भारत की पहली बैडमिंटन खिलाड़ी हैं जिन्होंने सिर्फ 21 साल की उम्र में रियो ओलंपिक में रजत पदक जीता है। वह दुनिया के टॉप-10 खिलाड़ियों में से हैं। महिला हो या पुरुष, सिंधु से पहले किसी भी भारतीय खिलाड़ी ने वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप नहीं जीती है।

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

खेलों में कितनी है महिलाओं की भागीदारी?

आँकड़ों की बात करें तो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बीते पाँच वर्षों में महिला खिलाड़ियों की संख्या में काफ़ी इज़ाफा देखने को मिला है। खेल मंत्रालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2018 से 2020 की अवधि में खेलो इंडिया गेम्स में महिला खिलाड़ियों की भागीदारी में कुल 160 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। वहीं, ओलंपिक डेटाबेस के अनुसार, साल 2000 में ओलंपिक खेलों में कुल 38 फीसदी महिलाओं की भागीदारी देखी गई थी, जो कि साल 2016 में बढ़कर 45 फीसदी और साल 2020 में 47 फीसदी हो गई।

राजस्थान में आखिर खेल में क्यों कम है महिलाओं की भागीदारी?[13,14,15]

राजस्थान में खेल में महिलाओं की पर्याप्त संख्या में भागीदारी न होने के कुछ कारण ये हो सकते हैं-

- एक रिसर्च के दौरान लोगों ने बताया कि स्कूलों द्वारा खेल पर ज़ोर न दिया जाना व सुविधाओं का अभाव इसकी बड़ी वजहें हैं।
- महिलाओं को रोज़मर्रा के आधार पर लिंगवाद के कई मुद्दों का सामना करना पड़ता है, चाहे वह कार्यस्थल हो या घर। उनके पहनावे, उनकी बातचीत व व्यवहार की निगरानी की जाती है और उसी आधार पर उनका आंकलन किया जाता है।
- अधिकतर लोगों का मानना है कि महिला एथलीटों को मातृत्व और खेल करियर के बीच संतुलन स्थापित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- इसके अलावा, पुरुष खिलाड़ियों की तुलना में महिला खिलाड़ियों को कम धन मिलता है, जिससे उनके लिये प्रतिस्पर्द्धा करना एवं लंबे समय तक खेल में लिप्त रहना मुश्किल हो जाता है।
- खेल जगत में महिलाओं के अथक प्रयासों के बावजूद उन्हें अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में बराबर सम्मान या मान्यता प्राप्त नहीं होती है।
- कई बार कोई सुरक्षित विकल्प न होने के कारण अन्य परिवारों के साथ कारपूलिंग जैसी परिस्थिति या लड़की के पास परिवार के साथ घर पर रहने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं होता है।
- हाल की प्रगति के बावजूद महिला एथलीटों के साथ वास्तविक या कथित यौन अभिविन्यास और लिंग पहचान के आधार पर भेदभाव बना हुआ है।
- प्रशिक्षित एवं गुणवत्तायुक्त कोच की अनुपस्थिति भी एक बड़ा कारण है। कई बार कोच उन लड़कों के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, जिनके पास प्रशिक्षण हेतु धन अधिक होता है।
- महिला खेलों को अक्सर मीडिया में कम दिखाया जाता है, जिससे महिला एथलीटों के लिये पहचान और प्रायोजन के अवसर प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

सुझाव

- खेलों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिये सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि उन्हें उनके परिवार का साथ मिले।
- इसके अलावा, राज्य सरकारों को खेलों में भाग लेने से संबंधित सेमिनार और शिविरों का आयोजन करवाना चाहिये ताकि महिलाओं के साथ-साथ उनके परिवार भी खेलों के प्रति ज़ागरूक हों।
- योजनाओं को थोड़ा और बेहतर तरीके से लागू किया जाए ताकि सभी ज़रूरतमंदों को उनका लाभ मिल सके।
- खिलाड़ी महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के साथ-साथ खेल से जुड़ी सुविधाएँ उपलब्ध करवाए जाने की आवश्यकता है।[16,17,18]

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

- स्थानीय स्तर पर महिलाओं के लिये विभिन्न खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाई जानी चाहिये ताकि अच्छी खिलाड़ियों की पहचान हो सके और उनकी प्रतिभा को निखारा जा सके।

अंत में हम कह सकते हैं कि ओलंपिक और पैरालम्पिक में भारतीय महिलाओं का शानदार प्रदर्शन इस बात की ओर संकेत दे रहा है कि बदलाव की लहर चल पड़ी है जो दूर तक जाएगी। व्यावहारिक और सामाजिक बदलाव ही महिलाओं के आगे आने के द्वार खोलेगा। जैसे-जैसे महिलाएँ शिक्षा, करियर और अपनी ज़िंदगी के फ़ैसले स्वयं लेने में सक्षम होती जाएंगी, वैसे-वैसे लोग भी इसे स्वीकार करने लगेंगे और खेल जैसे क्षेत्रों में भी उनकी भागीदारी बढ़ती जाएगी। संक्षेप में कहें तो हम सभी को अपनी परंपरागत सोच से बाहर निकलना होगा और यह स्वीकार करना होगा कि ''मेडलिस्ट पेड़ पर नहीं उगते, उन्हें बनाना पड़ता है, प्यार से..मेहनत से और लगन से।''

परिणाम

पिछले महीने में, एक परी कथा नष्ट हो गई है और एक शक्तिशाली एथलेटिक विरासत के पीछे का मजबूत ढांचा ढह गया है। यूएसए जिमनास्टिक्स, एक ओलंपिक स्वर्ण-पदक-उत्पादक मशीन, अपने पूर्व आधिकारिक डॉक्टर लैरी नासर द्वारा दशकों से 150 से अधिक युवा जिमनास्टों के निरंतर दुर्व्यवहार के खुलासे के बाद पूरी तरह से हिल गई है। 19 जनवरी को नासर की सजा पर, तीन बार के ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता और लंदन और रियो में अमेरिकी महिला जिमनास्टिक टीम की कप्तान एली रईसमैन ने इसे "खेल के इतिहास में यौन शोषण की सबसे खराब महामारी" बताया। अपने बयान में, रायसमैन ने यूएसए जिमनास्टिक्स और यूएस ओलंपिक समिति (नासर अमेरिकी ओलंपिक टीम के डॉक्टर भी थे) को बुलाया और पूछा, "ईमानदारी कहां है? पारदर्शिता कहां है?" नासर के खिलाफ शिकायतों की समयरेखा इंगित करती है कि हर कदम पर, युवा जिमनास्टों को विश्वविद्यालय के अधिकारियों, जहां उन्होंने काम किया (मिशिगन राज्य), राष्ट्रीय महासंघ या राष्ट्रीय ओलंपिक शासी निकाय से बहुत कम समर्थन मिला। इस आधिकारिक उपेक्षा और जानबूझकर की गई निगरानी के परिणाम रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं।

यदि दुनिया के सबसे संगठित, व्यवहार्य और विकसित खेल पारिस्थितिकी तंत्र में नाबालिगों और युवा लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार और शोषण हुआ है, तो हम कल्पना नहीं कर सकते कि भारत में क्या होता है।

लेकिन वास्तव में हम कर सकते हैं.

• अगस्त 2009 में, आंध्र क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव वी चामुंडेश्वरनाथ को कई महिला क्रिकेटरों की शिकायतों के बाद उनके पद से बर्खास्त कर दिया गया था कि उन्होंने चयन के बदले में यौन संबंध मांगे थे। महिला क्रिकेटरों में से एक ने चामुंडेश्वरनाथ के खिलाफ अपनी शिकायत वापस ले ली और कहा कि उस पर ऐसा करने के लिए दबाव डाला गया था। छह साल बाद, क्रिकेटर ने अपने परिवार द्वारा बताई गई "घरेलू समस्याओं" के कारण आत्महत्या कर ली। चामुंडेश्वरनाथ वर्तमान में तेलंगाना बैडमिंटन एसोसिएशन के उपाध्यक्ष हैं। 2 से अध्यक्ष पुलेला गोपीचंद और हैदराबाद जिला बैडमिंटन एसोसिएशन के अध्यक्ष। उन्होंने एथलीटों को बीएमडब्ल्यू कारें दान करके राष्ट्रीय सुर्खियां बटोरीं: 2016 में रियो ओलंपिक के बाद पीवी सिंधु, साक्षी मलिक, दीपा करमाकर और गोपीचंद को और अगले साल भारत की महिला क्रिकेट कप्तान मिताली राज को।[19,20]

• जुलाई 2010 में, भारतीय हॉकी अधिकारियों को महिला टीम के वीडियोग्राफर बसवराज के बारे में एक गुमनाम शिकायत मिली, और फिर 20 वर्षीय जूनियर विश्व कप कप्तान से कोच एमके कौशिक के आचरण के बारे में एक ईमेल मिला, जिसमें 30 अन्य खिलाड़ियों द्वारा हस्ताक्षरित एक समर्थन पत्र था। वीडियोग्राफर को बर्खास्त कर दिया गया और कौशिक ने इस्तीफा दे दिया। जुलाई 2013 में, कौशिक को चार महीने की अवधि के लिए पुरुष टीम का स्टॉप-गैप कोच नियुक्त किया गया था। फिर 2014 में, हॉकी इंडिया (HI) ने उन्हें सेंट्रल ज़ोन के लिए हाई-परफॉर्मेंस मैनेजर बनाया; वह वर्तमान में भोपाल में HI पुरुष हॉकी अकादमी की वेबसाइट पर इसके मुख्य कोच के रूप में सूचीबद्ध हैं। वह खिलाड़ी जिसने कौशिक पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए ईमेल भेजा था? वह फिर कभी भारत के लिए नहीं खेलीं.

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

• मार्च 2011 में, तमिलनाडु बॉक्सिंग एसोसिएशन के तत्कालीन सचिव एके करुणाकरण को एक महिला मुक्केबाज द्वारा यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने के बाद गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद मुक्केबाज ने चेन्नई छोड़ दिया और किक बॉक्सिंग और मिश्रित मार्शल आर्ट में चले गए।

• अगस्त 2014 में, ग्लासगो कॉमनवेल्थ गेम्स के दौरान, कुश्ती रेफरी वीरेंद्र मलिक को उस गेस्ट हाउस के एक स्टाफ सदस्य पर कथित यौन उत्पीड़न के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, जिसमें वह रहते थे।

• सितंबर 2014 में, जिमनास्टिक कोच मनोज राणा और जिमनास्ट चंदन पाठक पर नई दिल्ली के आईजीआई स्टेडियम में प्रशिक्षण ले रही एक महिला जिमनास्ट को परेशान करने का आरोप लगाया गया था। जिमनास्ट ने यह भी आरोप लगाया कि महासंघ के अधिकारियों ने उनसे शिकायत वापस लेने की कोशिश की। कम से कम दिसंबर 2017 तक, राणा अभी भी आईजीआई स्टेडियम में कोचिंग कर रहे थे।

• हाल ही में अक्टूबर 2017 में, तीरंदाजी कोच सुनील कुमार को एक ब्रिटिश तीरंदाज के खिलाफ अनुचित व्यवहार के लिए अर्जेंटीना में यूथ वर्ल्ड तीरंदाजी चैंपियनशिप से घर भेज दिया गया था और अब तक निलंबित हैं।

"इस बात से निश्चिंत रहो. भारतीय खेल खतरे के क्षेत्रों से भरा हुआ है, जो आमतौर पर टीम के बजाय व्यक्तिगत खेल में अधिक पाया जाता है। भारत की महिला एथलीट अपने खेल में करियर बनाने की कोशिश करते समय माइनफील्ड में चलती हैं।

राजस्थान में यह एक दयनीय स्थिति है लेकिन साल दर साल परत दर परत बहुत कुछ घटित हो रहा है। इस सप्ताह की शुरुआत में, मैंने खेल जगत की कई महिलाओं को संदेश भेजे जिन्हें मैं जानती थी और उनसे सत्ता और प्राधिकार की स्थिति में बैठे लोगों द्वारा उत्पीड़न, दुर्व्यवहार, हेरफेर, जबरदस्ती के अपने अनुभव और ज्ञान के बारे में बताने के लिए कहा। किसी भी महिला ने इस बात से इनकार नहीं किया कि ऐसा हुआ था और भारतीय खेल में यह संभव से अधिक था - भले ही यह उनके साथ नहीं हुआ था या उनके खेल में आम नहीं था। दूसरों से कहानियाँ आईं।

इस बात को सुनिश्चित करें. भारतीय खेल खतरे के क्षेत्रों से भरा हुआ है, जो आमतौर पर टीम के बजाय व्यक्तिगत खेल में पाया जाता है (क्योंकि सामूहिक रूप से औपचारिक शिकायतें दर्ज करने के लिए अक्सर संख्या की ताकत और सुरक्षा हो सकती है)। भारत की महिला एथलीट अपने खेल में करियर बनाने की कोशिश में माइनफील्ड पर चलती हैं।

राजस्थान में किसी महिला एथलीट की शिकायत को निपटाते समय सबसे आम आधिकारिक प्रतिक्रिया यह होती है कि यह घोटाला एक विशेष अधिकारी को बदनाम करने का 'अभियान' है क्योंकि चुनाव नजदीक हैं। अब आंतरिक शिकायत समितियाँ हैं, लेकिन इन समितियों में पुरुषों की भरमार है, जो पीड़ित की शिकायत के बजाय आरोपी की सार्वजनिक प्रतिष्ठा पर ध्यान दे सकते हैं। समिति के एक सदस्य द्वारा कौशिक के बचाव में कहा गया, ''उसने कभी उस महिला को नहीं छुआ है.''

निष्कर्ष

राजस्थान में यह कोई नामकरण या शर्मनाक बात नहीं है क्योंकि भारत की खेल नौकरशाही बहुत प्रतिशोधी है। महिला एथलीटों के लिए कोई सार्थक शिकायत निवारण तंत्र नहीं होने से, एक शिकारी कोच या अधिकारी का नाम लेना एथलीट के नाम का खुलासा करना बन जाता है। जो अनिवार्य रूप से एथलीट के खेल करियर और आजीविका के अंत का प्रतीक है। न ही इस लेख में भारतीय खेल में काम करने वाले अच्छे लोगों के लिए #notallmen सूदनर शामिल है। उनके नेक काम को आम तौर पर उचित श्रेय दिया जाता है - यहां तक कि असंगत रूप से भी, यह तर्क दिया जा सकता है, जब उनकी तुलना उनके वरिष्ठ सहकर्मियों को दी गई सज़ा से की जाती है।

क्या इससे निकलने का कोई रास्ता नहीं है? यह कानून में मौजूद है - खेल संहिता 2011 में - लेकिन सक्रिय अभ्यास में नहीं। महिला दिवस 2017 पर, तत्कालीन राष्ट्रीय खेल मंत्री ने महिला एथलीटों की शिकायतों को देखने के लिए एक विशेष समिति बनाने की योजना की घोषणा की। नए मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़, जो स्वयं एक ओलंपिक पदक विजेता हैं, के

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

अधीन अभी तक इसके प्रकट होने का कोई संकेत नहीं है। और अगर कोई समिति होती भी, तो क्या वे भारतीय खेल में शिकारियों को बुला सकती थी? नहीं।[19]

राजस्थान में यह केवल एक अकेली, प्रभावशाली महिला एथलीट के दर्द और गुस्से से ही आ सकता है, जिसकी आवाज से सभी द्वार खुल सकते हैं। या यदि कोई एथलीट दुर्व्यवहार के इतिहास को व्यवस्थित रूप से चार्ट और रिकॉर्ड करता है, तो इसे अदालत में ले जाता है और सहानुभूतिपूर्ण न्यायाधीश की उम्मीद करता है। या यदि कोई अंगूर लेता है और इसे भारतीय खेलों की काली सूची में डाल देता है।

राजस्थान में इसे मूल रूप से याद रखें, लड़कियों, पहले से कहीं अधिक सफल भारतीय महिला एथलीटों के युग में भी, कोई भी आपके लिए नहीं लड़ेगा। यह लड़ाई तुम्हें लड़नी है। उस पीढ़ी के लिए जो आपका अनुसरण करेगी। खिलाफ खड़े हो जाओ और अपने नासरों को बुलाओ। और एक दिन, उनमें से एक को जेल भेज दिया जाएगा।[20]

संदर्भ

1. "स्त्रीद्वेष।" मरियम-वेबस्टर, मरियम-वेबस्टर, www.merriam-webster.com/dictionary/misogyny।
2. ^ डेनियल, दयाना बी. यू थ्रो लाइक ए गर्ल: स्पोर्ट एंड मिसोगिनी ऑन द सिल्वर स्क्रीन फिल्म एंड हिस्ट्री (2005): एन। पग. वेब. 2 मार्च 2015.
3. ^ फ़िंक, जेनेट (जनवरी 2016)। "सादी दृष्टि में छिपना: खेल में लिंगवाद की अंतर्निहित प्रकृति"। खेल प्रबंधन जर्नल । 30 (1): 1-7. डीओआई : 10.1123/जेएसएम.2015-0278 ।
4. ^ विश्वविद्यालय, एडलर (16 अक्टूबर 2015)। "नो गर्ल्स अलाउड: द वाइड वर्ल्ड ऑफ़ स्पोर्ट मिसोगिनी" । सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यवसायी . 2 अप्रैल 2019 को लिया गया ।
5. ^ "करीम अब्दुल-जब्बार: हमें खेलों में स्त्री द्वेष पर रोक लगाने की जरूरत है" । समय । 2 अप्रैल 2019 को लिया गया ।
6. ^ मेस्नर, माइकल. "संचार और खेल पर विचार।" संचार और खेल पर विचार. सेज जर्नल्स, 30 दिसंबर 2012। वेब। 12 मार्च 2015.
7. ^ ज़िरिन, डेव (28 अप्रैल 2016)। "खेल पत्रकारिता में स्त्री द्वेष से निपटने वाली दो महिलाओं से मिलें" । राष्ट्र । आईएसएसएन 0027-8378 . 2 अप्रैल 2019 को लिया गया ।
8. ^ ब्रायंट, हावर्ड. "खेलकूद की पुरुष समस्या।" ईएसपीएन. ईएसपीएन इंटरनेट वेंचर्स, 18 अप्रैल 2013। वेब। 6 मई 2015 ।
9. ^ मूनी, डेविड. "फुटबॉल में लिंगवाद की भयावह वास्तविकता।" न्यू स्टेट्समैन. न्यू स्टेट्समैन, 30 सितंबर 2014। वेब। 6 मई 2015। < http://www.newstatesman.com/sport/2014/09/chilling-reality-sexism-football >।
10. ^ मस्टो, मिशेला, एट अल। "'फिज़ल से सिज़ल तक!' टेलीविज़न खेल समाचार और लिंग-निष्पक्ष लिंगवाद का उत्पादन।" लिंग और समाज, खंड। 31, नहीं. 5, 2017, पीपी. 573-596., डीओआई:10.1177/0891243217726056।
11. ^ द फीमेल एथलीट: मिसिंग इन एक्शन | चेरिल कुकी | TEDxPurdueU
12. ^ लिंग और समाज। "खेल में लैंगिक नरम लिंगवाद।" लिंग और समाज, 3 नवंबर 2017, जेंडरसोसाइटी.वर्डप्रेस.com/2017/10/05/gender-bland-sexism-in-sport/।
13. ^ ब्रूस टोनी। 2015. खेल के समाजशास्त्र का आकलन: मीडिया और महिला खिलाड़ियों के प्रतिनिधित्व पर। खेल के समाजशास्त्र के लिए अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा 50:380-84।
14. ^ "पे गैप | कैम्ब्रिज इंग्लिश डिक्शनरी में परिभाषा।" वेतन अंतर | कैम्ब्रिज अंग्रेजी शब्दकोश में परिभाषा,dictionary.cambridge.org/us/dictionary/english/pay-gap।
15. ^ फ्लेक, कॉलिन आर, एट अल। "एडवांटेज मेन: द सेक्स पे गैप इन प्रोफेशनल टेनिस।" खेल के समाजशास्त्र के लिए अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा, खंड। 48, नहीं. 3, 2012, पीपी. 366-376., डीओआई:10.1177/1012690212442166।

SSN: 2394-2975 | www.ijarety.inl | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

16. ^ टिग्नोर, स्टीव (28 नवंबर 2015)। "2007: विंबलडन समान पुरस्कार राशि की पेशकश करता है" । टेनिस . 28 मार्च 2018 को लिया गया ।
17. ^ "लिंग के आधार पर शीर्ष 10 एथलीट समर्थन अर्जित करने वाले" । 24 मार्च 2014.
18. ^ बैडेनहाउज़ेन, कर्ट (14 अगस्त 2017)। "सेरेना विलियम्स 2017 में सबसे अधिक वेतन पाने वाली महिला एथलीटों में शीर्ष पर हैं" । फोर्ब्स । 28 मार्च 2018 को लिया गया ।
19. ^ पिलोन, मैरी। "विश्व कप वेतन अंतर।" पोलिटिको, पोलिटिको, 12 जुलाई 2015, www.politico.eu/article/world-cup-women-pay-gap-gender-equality/।
20. ^ "स्पोर्ट एंड द जेंडर पे-गैप।" स्पोर्ट्स थिंक टैंक, www.sportsthinktank.com/blog/2019/02/sport-and-the-gender-pay-gap।

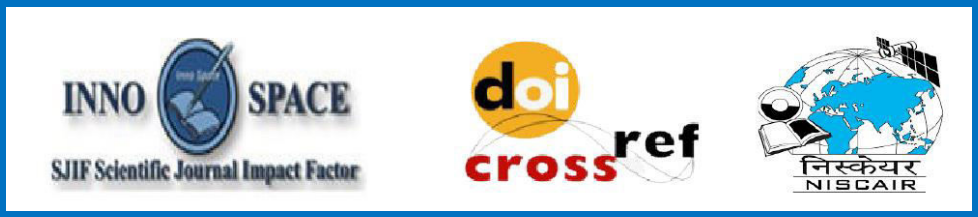

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
doi crossref
निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

www.ijarety.in
editor.ijarety@gmail.com